[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3400

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत के प्रचार प्रसार में संचार साधनों की भूमिका

डॉ. (श्रीमती) आशा खरे,
सहायक प्राध्यापक (संगीत),
शास कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

जर्मनी के सुप्रसिद्ध विद्वान हीगल ने संगीत को ललित कला की श्रेणी में रखा है। भारतीय संगीत को चारों वेदों का सार कहा गया है। भारत में संगीत की सगुण उपासना हुई है, उसे वीणा वादिनी के रूप में साकार पूजा गया है। सा विद्या या विमुक्तये संगीत ही है। वैदिक काल में संगीत की बागडोर ब्राह्मणों के हाथ में थी। इस काल में संगीत धार्मिक वातावरण में पनपा। समुद्रगुप्त स्वयं वीणा वादक थे। इस काल में संगीत का विकास राजाश्रय में होने लगा था। शास्त्रीय व लोक संगीत का प्रचार भी हुआ। संस्कृत के महाकवि एवं नाटककार कालिदास एवं भास ने इस काल में महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे। गुप्तकाल के पश्चात राजपूतों का शासन रहा। भारतीय संगीत जो एकता के सूत्र में बँधा हुआ था वह दो धाराओं में विभक्त होने लगा उत्तर भारत का संगीत एवं दक्षिण भारत का संगीत। संगीत के महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे गये। मुस्लिम प्रवेश युग में शारंगदेव ने संगीत रत्नाकार नामक संगीत का प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा। इस काल में अमीर खुसरो ने संगीत के क्षेत्र में नई क्रांति लाई। वाद्ययंत्रों की उत्पत्ति, गायन शैलियां - ख्याल, कव्वाली, गज़ल, का प्रचलन हुआ। मुगल काल में भक्ति संगीत का जोर रहा। ध्रुपद-धमार गायन प्रचलित रहा। मुगल काल में अकबर के शासनकाल को संगीत का स्वर्ण युग कहा गया है। इस काल में संगीतज्ञों एवं कलाकारों को राजाश्रय प्राप्त था, अत: कला का खूब विकास हुआ।

औरंगज़ेब के शासनकाल में संगीतज्ञों की स्थिति अच्छी नहीं थी, संगीतज्ञों को राजाश्रय नहीं मिला, फलत: संगीत राज दरबारों से हटकर घरानों में विकसित हुआ। देश छोटी-छोटी रियासतों में बँट गया था और उसी के अनुसार घराने प्रचलित रहे यथा ग्वालियर, आगरा, रामपुर, बड़ौदा, शहरों में लखनऊ, दिल्ली, बनारस, पटियाला, जयपुर आदि। संगीत कला का प्रचार प्रसार घरानों के माध्यम से होने लगा। मुस्लिम शासन काल के बाद हमारे देश में अंग्रेजों का शासन रहा। इस काल में संगीत कला का विकास प्रचार-प्रसार क श्रेय संगीत की दो महान विभूतियों को जाता है पँ. विष्णु नारायण भातखंडे और पँ. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर। संगीत कला के प्रचार-प्रसार हेतु विविध स्थानों में संगीत सम्मेलन आयोजित किये गये। श्सन 1916 में उन्होंने बड़ौदा में संगीत सम्मेलन आयोजित किया, जिसका उद्घाटन महाराजा बड़ौदा द्वारा हुआ। इस सम्मेलन में संगीत के बड़े-बड़े विद्वानों द्वारा संगीत के अनेक तथ्यों पर गम्भीरतापूर्वक आपस में विचार विनिमय हुये और ऑल इंडिया म्यूज़िक अकेडमी की स्थापना का प्रस्ताव पास हुआ। इसके बाद दूसरा दिल्ली में, तीसरा बनारस में और चौथा लखनऊ तथा अन्य स्थानों में सम्मेलन हुये। इस तरह सम्मेलन परम्परा की नींव पड़ी। ब्रिटिश काल के पश्चात स्वतंत्र भारत में कलाकार राज्य की सीमायें लांघकर जन सामान्य तक आये। गायन, वादन एवं नृत्य के कलाकारों ने संगीत के उत्कृष्ट कोटि के कार्यक्रम मंच एवं संगीत समारोहों में प्रस्तुत किये जिससे पँ. भातखंडे एवं पलुस्कर के स्वप्न पूरे हो गये।

वर्तमान में यूजीसी द्वारा शासकीय संस्थाओं में सम्मेलनों द्वारा संगीत का प्रचार प्रसार तीव्र गति से हो रहा है। ये सम्मेलन राष्ट्रीय स्तर एवं अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर हो रहे हैं, जिसमें सांगीतिक विषयों पर चर्चा हेतु विषय विशेषज्ञ आमंत्रित किये जाते हैं, प्राध्यापक वर्ग निर्धारित विषय पर शोध पत्र लिखते हैं, पत्र - वाचन होता है और जो निष्कर्ष निकलते हैं उनका प्रकाशन पत्रिकाओं में होता

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

है। चूँकि संगीत विषय क्रियात्मक विधा है, अतैव क्रियात्मक पक्ष का भी सम्मेलन सेमिनार एवं संगोष्ठी में प्रदर्शन किया जाता है। इसके अलावा समारोहों के आयोजन से भी संगीत के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा मिला है - ग्वालियर का तानसेन समारोह, मैहर का अलादीन समारोह, वृंदावन में स्वामी हरिदास समारोह, खजुराहो में मध्यप्रदेश लोक कला परिषद द्वारा शिल्पग्राम में विविध प्रांतों के कलाकारों के कार्यक्रम होते हैं, खजुराहो में विविध शास्त्रीय शैली के नृत्यों का भारत सरकार द्वारा वार्षिक उत्सव मनाया जाता है, और संगीत कला का प्रचार प्रसार और कलाकार एवं श्रोता/दर्शक का सीधा सम्पर्क होता है।

प्रचार प्रसार का एक और माध्यम है नाटक अकादमी। भारतीय संगीत रियासतों में राजाओं के संरक्षण में पनप रहा था। उसी का संरक्षण स्वतंत्र भारत में भारतीय सरकार ने किया। कला और संस्कृति का विकास हुआ। सन 1952 में भारत सरकार ने संगीत कला को प्रोत्साहन देने के लिये राष्ट्रीय पदक प्रदान करने प्रारम्भ किये। सन 1953 में श्संगीत नाटक अकादमीश् की स्थापना की तथा उसी क्रम में श्ललित कला अकादमीश् की स्थापना की। इन संस्थाओं के माध्यम से कलाकारों को आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिला। श्संगीत नाटक अकादमीश् ने समय समय पर राष्ट्रीय संगीत महोत्सवों का आयोजन किया और गीत एवं नृत्य पर राष्ट्रीय पुरस्कार दिये, कलाकारों को राष्ट्रीय उपाधियों से विभूषित किया। अनेक भारतीय गायक, वादक एवं नर्तक विदेशों में अपने संगीत कार्यक्रमों से जनता को मंत्र मुग्ध कर आये हैं। वहां सांस्कृतिक संस्थाओं की स्थापना की है, कलाकार वहां आवास कर रहे हैं और प्रशिक्षण दे रहे हैं। देश के विभिन्न प्रांतों में नाटक अकादमी, कला परिषद द्वारा संगीत कला का प्रसार हो रहा है। संगीत के योग्य छात्र छात्राओं को केन्द्रीय तथा प्रांतीय नाटक अकादमियाँ छात्रवृत्तियां भी प्रदान करती हैं। चयनित विद्यार्थी दो वर्ष की समयावधि में योग्य व कुशल शिक्षार्थियों के मार्गदर्शन में संगीत की विशेष शिक्षा ग्रहण करते हैं और ये ही विद्यार्थी कलाकार के रूप में जनता द्वारा सम्मानित हो रहे हैं।

संगीत कला के प्रचार-प्रसार का श्रेय पं. विष्णु नारायण भातखंडे एवं पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर को जाता है। संगीत की उन्नति एवं प्रचार प्रसार हेतु जगह जगह म्यूज़िक कॉलेजष् खोले गये। बड़ौदा, लाहौर, मुम्बई, ग्वालियर, लखनऊ, दिल्ली, बनारस आदि अनेक स्थानों पर संगीत महाविद्यालय खोले गये। म. प्र. शासन द्वारा सन 1956 में इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खोला गया। सुर सिंगार, संगीत समाज विभिन्न प्रांतीय म्यूज़िकल सर्कल्स आदि संस्थाओं द्वारा मुम्बई, अजमेर, कलकत्ता, दिल्ली, बनारस, इलाहाबाद, आगरा, जयपुर, हैदराबाद आदि बड़े-बड़े शहरों में श्रेष्ठ स्तर के संगीत सम्मेलनों एवं सभाओं का आयोजन होता रहा है जिससे शास्त्रीय संगीत के प्रति जन सामान्य में उत्साह जागृत हुआ और अनेक स्थानों पर संगीत विद्यालयों की स्थापना हुई। स्वतंत्रता के पश्चात गायन-वादन का विषय स्कूल-शिक्षा में एक ऐच्छिक विषय के रूप में स्वीकृत किया गया। विभिन्न माध्यमिक शिक्षा बोर्डों व विश्वविद्यालयों में स्नातक स्तर पर संगीत विषय के पाठ्यक्रम तैयार किये गये और इसके शिक्षण की समुचित व्यवस्था की गई। अत: स्पष्ट है कि इन संस्थाओं के माध्यम से संगीत का प्रचार-प्रसार खूब हुआ।

भारतीय संगीत में रविबाबू का सर्वोत्कृष्ट स्थान है, उन्होंने भारतीय संगीत के आत्मिक पृष्ठ को सौन्दर्यात्मक बनाया। पँ. भातखंडे एवं पलुस्कर के अलावा श्री एस. एन. रातंजनकर, राजा भैया पूँछवाले, पँ ओम्कार नाथ ठाकुर, प्रो. शंकरराव व्यास, विनायक राव पटवर्धन, पं. फीरोज़ फ्रामजी आदि अनेक विद्वानों ने संगीत से संबन्धित महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। हाथरस प्रकाशन द्वारा मात्र संगीत विषय की पुस्तकें, पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित होती हैं। संगीत मासिक पत्रिका कला विहार (मिरज), मध्यप्रदेश कला परिषद द्वारा कलावार्ता और आदिवासी लोक कला परिषद द्वारा चौमासा पत्रिका प्रकाशित हो रही हैं। उ.प्र. की ब्रज कला केन्द्र की कई

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

शाखायें संगीत के प्रचार प्रसार में लगी हैं। उत्सव, तीज-त्योहार के अवसर पर मेलों में सांगीतिक प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रचार-प्रसार हो रहा है। महाविद्यालयों में युवा-उत्सव में रूपांकन पक्ष, सांगीतिक-सांस्कृतिक एवं बौद्धिक पक्षों को बढ़ावा देने के लिये, महाविद्यालय स्तर से राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगितायें सम्पन्न होती हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात संगीत की विविध विधाओं का सिनेमा संगीत के माध्यम से भी प्रचार-प्रसार हुआ है। सिनेमा संगीत में नौशाद सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ रहे। सिनेमा संगीत में शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत, सुगम संगीत, लोक संगीत, पॉप संगीत, रॉक संगीत आदि सभी तरह के संगीत का सिनेमा के माध्यम से प्रचार प्रसार हुआ।

संगीत कला के प्रचार प्रसार का एक माध्यम रेडियो एवं दूरदर्शन है, जिसको घर बैठे देखा व सुना जाता है। संगीत के विकास और प्रचार में आधुनिक वैज्ञानिक साधनों में आकाशवाणी एक मुख्य साधन है। रेडियो संगीत के लिये वरदान सिद्ध हुआ है। टेलिफोन, बेतार के तार से सम्बन्धित रेडियो एक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया है। भारत में पोस्ट एण्ड टेलीग्राफ विभाग ने द टाइम्स ऑफ इंडिया के सहयोग से संगीत के कार्यक्रम का प्रसारण मुम्बई से अगस्त 1921 ई में प्रारम्भ किया। मद्रास प्रेसीडेंसी क्लब के नाम से 16 मई 1924 को प्रसारण आरम्भ हुआ, सन 1954 से 1961 ई के मध्य अखिल भारतीय संगीत, वार्ता, नाटक आदि राष्ट्रीय कार्यक्रमों का प्रसारण हुआ। 30 अक्टूबर 1957 को अखिल भारतीय कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया जिसे विविध भारती नाम दिया गया। लोकगीत, नाटक, सांस्कृतिक बहुरंगी कार्यक्रमों द्वारा राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने की दिशा में इस विशाल योजना की अहम भूमिका थी। आकाशवाणी के माध्यम से फिल्म संगीत, भक्ति संगीत, सुगम संगीत, शास्त्रीय संगीत आदि का प्रसारण होता रहा है। उच्चकोटि के संगीतज्ञ रेडियो की उपयोगिता को स्वीकार कर रहे हैं, रेडियो के महत्व को भुलाया नहीं जा सकता है। संगीतज्ञों को रेडियो के माध्यम से अंत:प्रेरणा मिलती रही है। मद्रास, लाहौर, इलाहाबाद, पेशावर, देहरादून आदि स्थानों से सर्वप्रथम संगीत के कार्यक्रम प्रसारित हुए। 23 जुलाई 1927 से बम्बई से आकाशवाणी केन्द्र ने प्रसारण शुरु किया, इसके बाद कलकत्ता केन्द्र की स्थापना हुई। इसके बाद दिल्ली, पूना, श्रीनगर, जम्मू राजकोट, जयपुर, इन्दौर, शिमला, भोपाल आदि अनेक आकाशवाणी केन्द्रों से शास्त्रीय संगीत का प्रसारण होने लगा। विविध भारती आकाशवाणी का कार्यक्रम 3 अक्टूबर 1956 को प्रारम्भ किया गया और बंगलौर, इन्दौर, कर्नाटक, जयपुर, कलकत्त आदि केन्द्रों से विविध भारती के कार्यक्रम प्रसारित होने शुरू हो गये थे।

रेडियो और समाचार पत्रों की जो थोड़ी बहुत कमियाँ थीं, उनका समाधान आज टेलीविजन के माध्यम से खोज लिया गया है। भारत ने दूरदर्शन के क्षेत्र में बहुत बड़ी सफलता अर्जित की है। दूरदर्शन निश्चित रूप से प्रसारण का एक शक्तिशाली माध्यम है। 1925 ई में अमेरिकी वैज्ञानिक जोकिंस नीज ने यांत्रिक दूरदर्शन उपकरण का निर्माण किया। न्यूयार्क और वाशिंगटन के मध्य बेल टेलीफोन लेबोरेटरी द्वारा 1927 ई में तार के माध्यम से दूरदर्शन कार्यक्रम पेश किया गया। समय समय पर इस दिशा में नियमित विकास जारी रहा, भारत में यूनेस्को की सहायता से 15 सितम्बर 1965 ई में दूरदर्शन का आनन्द लिया गया। भारत में दूरदर्शन की विकास यात्रा का आरम्भ 1964 ई में हुआ। 15 अगस्त 1982 को भारत में रंगीन टेलीविजन का प्रारम्भ हुआ। वर्तमान में सम्पूर्ण देश में दूरदर्शन अनेक चैनलों द्वारा प्रसारण का कार्यक्रम सम्पन्न कर रहा है। दूरदर्शन संगीत के क्षेत्र में सांस्कृतिक और कलात्मक गरिमाओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर रहा है। दूरदर्शन से भी अखिल भारतीय संगीत और नृत्य के कार्यक्रम प्रसारित

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

होते रहते हैं। आधुनिक युग में हिन्दुस्तानी संगीत का जैसा व्यापक और महान प्रचार हुआ, वह पचास-साठ वर्ष पूर्व पहले कभी नहीं हुआ था। नये नये वैज्ञानिक साधनों से यह प्रचार किया गया। आज के युग में टेलीविजन पर संगीत से जुड़े कई रीएलिटी शो भी होते हैं, जिनके माध्यम से नई नई प्रतिभाओं को पहचाना व तराशा जाता है। कलाकारों के लिये दूरदर्शन वाकई एक जादू की छड़ी साबित हुआ है।

आज के युग में कम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल का संगीत के प्रचार-प्रसार पर क्या प्रभाव पड़ा है, यह किसी से छिपा नहीं। आज विभिन्न वेब-साइट्स के माध्यम से विश्व के किसी भी कोने में संगीत को सुना जा सकता है, उसके प्रदर्शन को देखा जा सकता है। कितने ही दुर्लभ गीत, बिरले कलाकार अपनी अपनी कृतियां इंटरनेट पर अपलोड कर चुके हैं, कर रहे हैं एवं दुनिया भर में रूचि रखने वाले लोगों को अपनी कला से अवगत करा रहे हैं, लोगों का ज्ञानवर्धन कर रहे हैं। गूगल, विकिपीडिया के ज़रिये कोई भी जानकारी आसानी से उपलब्ध हो रही है, यूट्यूब पर कितने ही महान कलाकार अपनी अपनी विधा की रिकॉर्डिंग लोगों के लिये उपलब्ध करा चुके हैं। यह अपने आप में संगीत के प्रचार-प्रसार की शायद सबसे बड़ी क्रांति है। आज संगीत की रिकार्डिंग के लिये सीडी, पेनड्राइव, मोबाइल फोन इत्यादि कितने ही साधन उपलब्ध हैं। आज यदि कोई संगीत कार्यक्रम को रिकॉर्ड करना चाहे तो सिर्फ एक मोबाइल फोन के ज़रिये ये आसानी से किया जा सकता है। कम्प्यूटर, सेलफोन के माध्यम से आसानी से इच्छुक व्यक्ति अपना काम अन्य व्यक्तियों के साथ साझा कर सकता है, उसकी राय आसानी से जान सकता है। कई कलाकारों ने तो अपनी पहचान ही इसी माध्यम से बनाई है।

संदर्भ -

वाजपेयी, राजेन्द्र। *सौन्दर्य* । पृष्ठ 174
जोशी, उमेश । भारतीय संगीत का इतिहास। पृष्ठ 379
शर्मा, स्वतंत्र । भारतीय संगीत एक वैज्ञानिक विश्लेषण। पृष्ठ 166
राजूरकर, गोविन्दराव। संगीत शास्त्र पराग। पृष्ठ 107, 108
राजूरकर, गोविन्दराव। संगीत शास्त्र पराग। पृष्ठ 108, 109
पंत, एन.सी.। जनसम्पर्क, विज्ञापन एवं प्रसारण माध्यम। पृष्ठ 169-172